International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

नगरीकरण और विदिशा के सामाजिक - आर्थिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन

रानू रघुवंशी[1], डॉ. गीता चौधरी[2]

[1]शोधार्थी
[2]शोध निर्देशक

प्रस्तावना

किसी देश या प्रदेश की जनसंख्या से आशय उस देश या प्रदेश की सीमा में एक निश्चित समय पर निवसित कुल जनसंख्या से होता है जबकि नगरीय जनसंख्या से आशय एक निश्चित समय पर नगरीय अधिवास में निवास करने वाली जनसंख्या से होता है। अंग्रेजी का अर्बन शब्द लैटिन भाषा के अर्बस और अरबनस शब्दो से बना है जिसका अर्थ क्रमशः नगर और नगर से सम्बन्धित बाते है। वान रिचथाफेन के अनुसार 'नगर के अन्तर्गत एक ऐसा सुव्यवस्थित वर्ग निहित है जहाँ का मुख्य कार्य वाणिज्य और उद्योग से सम्बन्धित होता है।" जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार भारत की कुल नगरीय जनसंख्या 37.71 करोड़ है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 31.2 प्रतिशत है।
नगरीकरण से अभिप्राय ग्रामीण जनसंख्या का नगरीय जनसंख्या में परिवर्तित होने से है। अनेकानेक कारणों से जब ग्रामीण जनसंख्या, नगरीय जनसंख्या में परिवर्तित होती है तो बदलाव की इस प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाता है। विदिशा जो केवल एक जिला के रूप में ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही एक व्यापारिक नगर के रूप में विकसित होता आ रहा है। हमें इसकी जानकारी रामायण जैन, बौद्ध तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रथों से मिलती है। विदिशा का विकास समय के परिवर्तन होता रहा है। विदिशा भारत के मध्य में स्थित होने के कारण यह कई राजवंशों की राजधानी भी रहा है । इसकी विकास गाथा प्राचीन काल से शुरू होती है और वर्तमान स्वरूप के रूप में प्रस्तुत करती है।

मूलशब्द :- जनसंख्या, नगरीकरण, भारतीय, परिवर्तित

परिभाषा -

गिफ्रिथ टेलर - ने कहा है कि "नगरीकरण गाँवों में निवसित जनसंख्या का स्थानान्तरित होकर नगरों में बसने की प्रक्रिया को कहते है।'

जी०टी०ट्रिवार्था- " कुल जनसंख्या में नगरीय स्थानो में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात को नगरीकरण का स्तर कहा जाता है।"[1]

किंग्सले डेविस - " कुल जनसंख्या ने नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात या इस अनुपात में वृद्धि को नगरीकरण कहते है।"

इस प्रकार नगरीकरण ग्रामीण से नगरीय बनने या होने, नगरोन्मुख गति, प्राथमिक व्यवसायों तथा ग्राम्य जीवन से द्वितीयक, तृतीयक आदि व्यवसायों तथा नगरीय जीवन पद्धति की दिशा में परिवर्तन है।[2]

नगरीकरण की माप चार दृष्टिकोण से की जा सकती है -

भौतिक - भौतिक दृष्टिकोण से नगरीय निर्मित क्षेत्र में क्षैतिज एवं उर्ध्वाधर विस्तार को नगरीकरण का सूचक माना जाता है।[3]

सामाजिक - सांस्कृतिक- इस दृष्टिकोण से ग्राम्य जीवन पद्धति से भिन्न उच्चतर जीवन पद्धति ही नगरीकरण का लक्षण होती है।

आर्थिक - प्राथमिक क्रियाओं विशेषतः कृषि व्यवसाय से कृष्येत्तर व्यवसाय नगरीकरण का सूचक है।

जनांकिकी - कुल जनसंख्या से नगरीय जनसंख्या के अनुपात में वृद्वि नगरीकरण का सूचक प्रमुख है।

1. नगरों की संख्या में वृद्धि
2. नगरीय जनसंख्या में वृद्धि
3. नगरीय जनसंख्या तथा कुल जनसंख्या के अनुपात में सकारात्मक वृद्धि
4. विभिन्न नगरीय वर्गों में जनसंख्या वृद्धि या परिवर्तन।

भौगोलिक स्थिति एवं क्षेत्रीय परिदृश्य

विदिशा जिला मध्य प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है। यह भोपाल कमिश्नरेट संभाग में है और सड़क एवं रेलमार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग 67, जो भोपाल और देवास को जोड़ता है, जिले से होकर गुजरता है। जिले में 11 तहसीलें और 7 विकासखंड हैं। विकासखंड मुख्यालय विदिशा, ग्यारसपुर, बासौदा, नटेरन, कुरवाई, सिरोंज, लटेरी हैं।[4] 7371 वर्ग किमी क्षेत्रफल वाला विदिशा जिला उत्तरी अक्षांश 220 20" और 240 22" तथा पूर्वी देशांतर 770 16" और 780 18'" के बीच स्थित है और भारतीय सर्वेक्षण विभाग की टोपोशीट संख्या 54H, 54L, 55E और 55 1 के अंतर्गत आता है। यह जिला पश्चिम में गुना और भोपाल जिलों, उत्तर में अशोक नगर, पूर्व में सागर और दक्षिण में रायसेन से घिरा है। विदिशा जिला मालवा पठार और विंध्य पर्वत श्रृंखला का एक हिस्सा है जिसकी स्थलाकृति लहरदार है। विदिशा जिला मुख्यतः एक कृषि प्रधान जिला है जो बेतवा बेसिन घाटी में स्थित है और इसकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि प्रधान है। जिले के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। गेहूँ, ज्वार, मक्का और सोयाबीन जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें हैं।

ज़िले का गठन 1956 में हुआ था। यह ज़िला 7 ब्लॉक और 11 तहसीलों में विभाजित है और मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र में फैला हुआ है। ज़िले में 1522 गाँव हैं। ज़िले में 6 नगर पालिकाएँ हैं। कर्क रेखा ज़िले को पार करने वाला प्रमुख अक्षांश है। कुल 580 ग्राम पंचायतें हैं। 20 पुलिस स्टेशन और 27 डाकघर हैं। ज़िला उत्तर में अशोक नगर, उत्तर-पश्चिम में गुना, उत्तर-पूर्व में सागर, दक्षिण-पश्चिम में भोपाल और दक्षिण-पूर्व में रायसेन से घिरा है।[5]

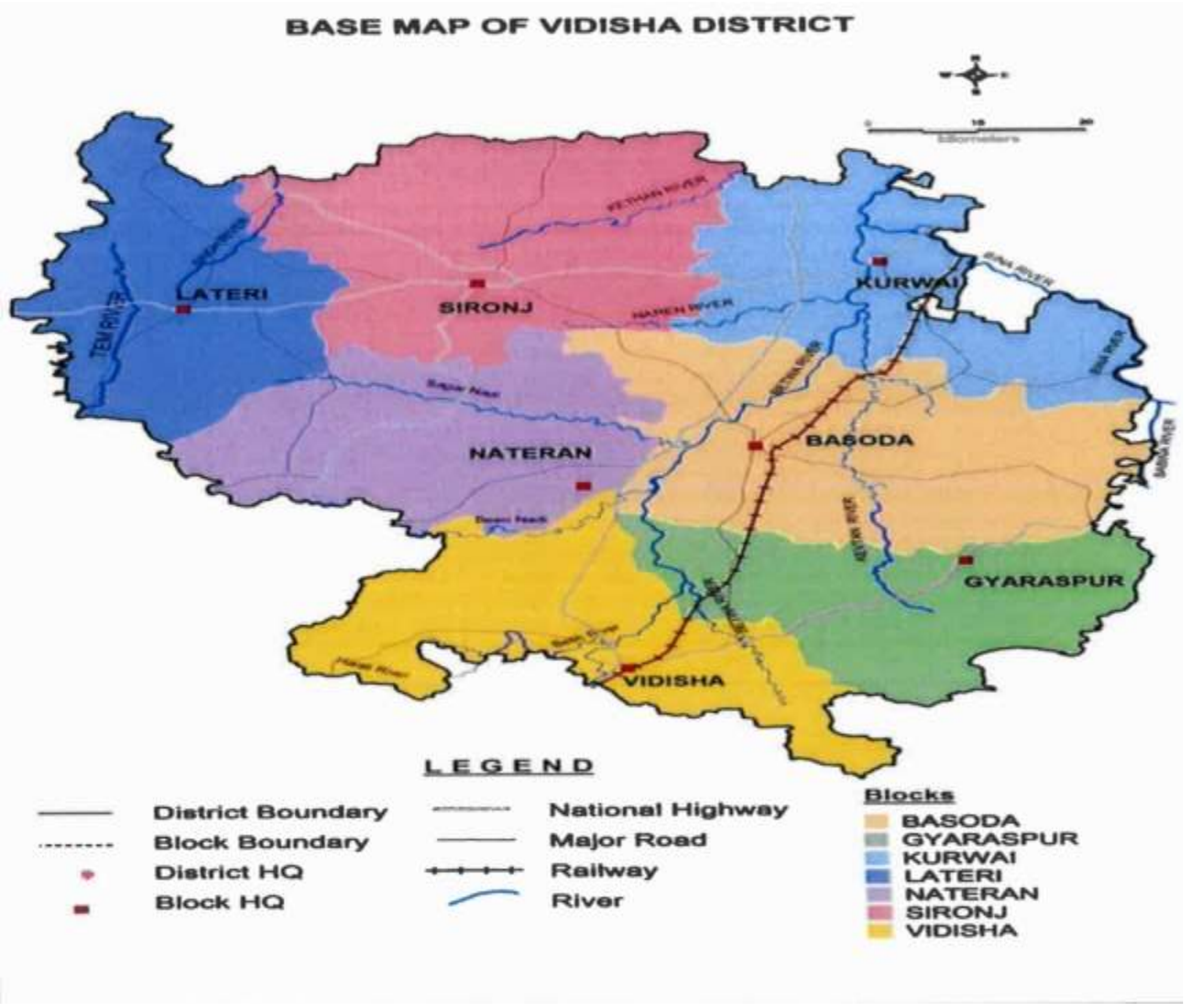

विदिशा का विकास –

विदिशा का इतिहास केवल इतिहास ही नहीं है यह एक भौगोलिक कहानी भी है जो हमें जैन ग्रंथों एवं बौद्ध ग्रंथों में मिलती है साथ ही विदिशा का उल्लेख हमें इस महाग्रंथों में भी प्राप्त होता है ऐसा माना जाता है कि विदिशा में रामायण रामायण के मुख्य पात्र भगवान राम के भाई शत्रुघन का शासन था साथ ही यहाँ पर बेस नदी प्रवाहित होती थी और इस नदी के कारण ही इसका नाम भिलसा हुआ था।

जहाँ प्राचीन संस्कृत- साहित्य में विदिशा का नाम वैदिस, वेदिश या वेदिसा मिलता है, वहीं पाली ग्रंथों में इसे वेसनगर, वैस्सनगर, वैस्यनगर या विश्वनगर कहा गया है। कुछ विद्धानों का मानना है कि विविध दिशाओं को यहाँ से मार्ग जाने के कारण ही इस नगर का नाम विदिशा पड़ा।

"विविधा दिशा अन्यत्र इति विदिशा

प्राचीनकाल में यहाँ यदुवंशी रहे है। आमीरों का अधिपत्य था, वे बड़े सशक्त व बलशाली थे। मान्यता है कि वैदिक काल में किसी आर्यदेवी ने यहाँ के महिष नामक राजा को पराजित किया था, अतः आज भी

यहाँ के सभी गाँवों में महिषासुर या भैंसासुर की पूजा होती है। श्रीमद देवी भागवत पुराण के अनुसार, वह देवी ही दुर्गा। महिषासुर मर्दनी कहलायी। सूर्यवंशी राजा सगर और श्रीराम के समय से वहाँ इक्ष्वाकु वंश के अधिपत्य का पता चलता है। कहा जाता है कि श्रीराम के अनुज शत्रुघ्न ने अश्वमेघ यज्ञ के दौरान हराकर यह क्षेत्र अपने पुत्र शत्रुघाती या यूपकेतु (कहीं- कहीं सुबाहु) को सौप दिया।[6]

स्कंद पुराण के अनुसार वाल्मिकी ऋषि, जो अग्नि शर्मा के नाम से बताये गये हैं, इसी क्षेत्र के निवासी थे। वही शंख ऋषियों के सानिध्य में रहकर वे प्रसिद्ध महर्षि बने

ई. पू. 5वीं - 6वीं सदी में महात्मा बुद्ध के समय विदिशा का विकास चरमोत्कर्ष पर था। भारत मध्य में स्थित होने के कारण यह चारों तरफ से अनेक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्रों को जोड़ता था। जहाँ पुरब की तरफ यह कौशाम्बी, काशी तथा पाटलिपुत्र जैसे नगरों से जुड़ा था, वहीं पश्चिम की ओर से भरुकच्छ (भरुच) व सुर्पारक (सोपारा) जैसे बंदरगाहों से संबद्ध था। दक्षिण की तरफ से यह तत्कालीन प्रतिष्ठित नगर पैठ से जुड़ा था। यहाँ के समृद्ध व्यापारियों ने भी यहाँ के स्तुप व अन्य छोटे- बड़े भवनों के निर्माण में अपना योगदान दिया।[7]

गुप्त काल तक विदिशा का महत्व बना रहा, लेकिन उसके बाद इसका पतन शुरु हो गया। कहा जाता है कि कुछ प्राकृतिक कारणों से नगर के समीप बहती नदी बेतवा सूख गई या फिर कुछ राजनैतिक समस्या पैदा हो गई, जिससे वहाँ की आबादी नदी के दक्षिणी किनारे की तरफ बस गयी, जो बाद में भीलसा के नाम से जानी जाने लगी।[8]

पुराणों में इसकी चर्चा भद्रावती या भद्रावतीपुरम् के रूप में है। जैन- ग्रंथों में इसका नाम भड्डलपुर या भद्दिलपुर मिलता है। मध्ययुग आते- आते इसका नाम सूर्य (भैलास्वामीन) के नाम पर भेल्लि स्वामिन, भेलसानी या भेलसा हो गया। संभवतः पढ़ने के क्रम में हुई किसी गलतफहमी के कारण 11वीं शताब्दी में अलबरुनी ने इसे "महावलिस्तान' के नाम से संबोधित किया है। 17वीं सदी में औरंगजेब के शासन काल में इसका नाम आलमगीरपुर रखा गया। सन् 1947 ई. तक सरकारी रिकॉडा में इसे "परगणे आलमगीरपुर' लिखा जाता रहा। परंतु ब्रिटिश काल में लोगों में भेलस्वामी या भेलसा नाम ही प्रचलित रहा। बाद में सन् 1952 ई. में जनआग्रह पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद द्वारा इस स्थान का तत्कालीन पुराना नाम विदिशा घोषित कर दिया।

विदिशा पर्यटन की दृष्टि से एक विशेष स्थान रखता है । पुरातात्विक और ऐतिहासिक संपदा से सर्वसम्पन्न है । पर्यटन की दृष्टि से यहां पर उदयगिरि, हेलियोडोरस, बेसनगर , लोहंगी शीला, ग्यारसपुर, सांची , चरणतीर्थ आदि जो विदिशा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं साथी पर्यटन की दृष्टि से आर्थिक एवं सामाजिक विकास के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं ।[9]**विदिशा नगर मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल संभाग का एक जिला मुख्यालय है। विदिशा जिला, तहसील, नगर प्रदेश की जनसंख्या का विवरण**

नियोजन हेतु महत्वपूर्ण है। वर्ष 2011 में विदिशा नगर पालिका में 36 वार्ड थे, जिन्हें वर्ष 2014 में बढ़ाकर एवं परिसीमन कर 39 किया गया। भारत की जनगणना 2011 में वर्ष 36 वार्डों की जानकारी उपलब्ध है। जनसांख्यिकी एवं सामाजिक विश्लेषण हेतु 36 वार्डों की जानकारी उपयोग की जा रही है। नगर के 36 वार्ड मानचित्र क्रमांक 3.1 में दर्शित है। नगर की जनसंख्या वर्ष 2011 में 155951 थी।

अमृत योजना के मानकों के अनुसार वार्ड वार कुल जनसंख्या, शिशु, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं साक्षरता की विदिशा नगर पालिका उच्चतम लिंगानुपात वार्ड क्रमांक 31 का 1024 है तथा सबसे कम लिंगानुपात वार्ड क्रमांक 13 का 867 है

जनसंख्या परिवर्तन

सारणी 3–सा– 13

क्र.	वर्ष	जनसंख्या	दशक वृद्धि दर (Decadal Growth Rate)
1	2	3	4
1	1951	19184	32.56%
2	1961	22718	44.48%
3	1971	43212	55.9 %
4	1981	65521	51.63 %
5	1991	92922	41.82%
6	2001	125453	35.01%
7	2011	155951+10127 (ग्राम बैस, तमोरिया, टीलाखेड़ी एवं मिर्जापुर)	32.21%

स्रोत– भारत की जनगणना 2011

विदिशा शहर का लिंग अनुपात्त 914 है, जबकि शिशु श्रेणी में यह अनुपात 901 है। विदिशा नगर में शिशु जनसंख्या 12.86 प्रतिशत है। शिशु जनसंख्या प्रतिशत वार्ड क्रमांक 18 में अधिकतम प्रतिशत है एवं वार्ड नं. 1. 2, 17, 20, 21, 29 में शिशु जनसंख्या प्रतिशत सबसे कम प्राप्त हुई है| विदिशा नगर में अनुसूचित जाति-जनजाति जनसंख्या कुल जनसंख्या की 17.07 प्रतिशत है।[10] उक्त जनसंख्या संपूर्ण नगर में वितरित है, किन्तु वार्ड क्रमांक 25 में उक्त श्रेणी की जनसंख्या तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है एवं वार्ड क्र0 2. 3, 4, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 15, 16, 19, 23, 24, 25 की जनसंख्या 10 प्रतिशत से भी कम है। विदिशा नगर क्षेत्र में साक्षरता दर 85.16 प्रतिशत हैं। शहर के वार्ड क्रमांक 1, 17. 18, 20, 25 में साक्षरता दर तुलनात्मक दृष्टि से कम एवं सबसे अधिक वार्ड क्रमांक 3. 6. 10, 12, 15, 16, 23, 24, 26, 28, 35 में पायी गई है।

विदिशा नगर का आर्थिक विकास

प्राचीन काल में विदिशा का आर्थिक विकास, मुख्य रूप से व्यापार और कृषि पर आधारित था। यह शहर बेतवा और बेस नदियों के संगम पर स्थित होने के कारण, एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गया था। इसके अतिरिक्त, विदिशा एक प्रमुख धार्मिक केंद्र भी था, जिससे पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा मिला। विदिशा, मध्य भारत में स्थित होने के कारण, विभिन्न व्यापारिक मार्गों का केंद्र था, जिससे पूर्व, पश्चिम,

उत्तर और दक्षिण के व्यापारिक केंद्रों से जुड़ना आसान था। यह शहर, कौशाम्बी, काशी, पाटलिपुत्र, भरुकच्छ (भरुच) और सोपारा जैसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों से जुड़ा था, जिससे व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। विदिशा के समृद्ध व्यापारियों ने सांची स्तूप और अन्य स्मारकों के निर्माण में भी योगदान दिया। मौर्य शासक अशोक ने विदिशा की एक व्यापारी की बेटी से विवाह किया था, जो इस शहर के प्रति उनके सम्मान को दर्शाता है।

मुगल सूबों में गुजरात के बाद मालवा औद्योगिक दृष्टि से प्रथम श्रेणी का था। अबुल फजल ने लिखा था कि यहां महीन सूत के वस्त्र बनाए जाते थे किंतु एक अन्य पुस्तक से विगत काल में सिरोज के वस्त्र उद्योग की भव्यता की पूरी जानकारी मिलती है। सिरोज में एक प्रकार की मलमल बनाई जाती थी। जो इतनी महीन होती है कि उसे शरीर पर पहन लेने पर भी त्वचा इस पर दिखाई देती थी। मानव शरीर पर कुछ पहना ही ना हो व्यापारियों द्वारा उसका निर्यात करने की अनुमति नहीं थी। मुगल सूबेदार उसे सम्राट के अंतःपुर के लिए तथा प्रधान मुसाहिबों के लिए भेज देता था। इसी कपड़े से सुल्तान और बड़े-बड़े संबंधों की पत्नियां गर्मी में अपने लिए कमीज तथा वस्त्र बनाती थी।[11]

बेतवा नदी के किनारे स्थित होने के कारण, विदिशा में अच्छी गुणवत्ता वाले गेहूं, चना और सोयाबीन का उत्पादन होता था। उपजाऊ मिट्टी और नदियों से मिलने वाली सिंचाई के कारण, कृषि गतिविधियों को बढ़ावा मिला। इसके अतिरिक्त, विदिशा में इमारती लकड़ी और तेंदूपत्ता जैसे वन नगरीय विकास के प्रारम्भिक उदाहरण हमे हड़पा सभ्यता के मध्य सिंधु और अन्य नदियों के किनारें आरंभ हुये। बहुत सारे तकनीकी आविष्कार आर्थिक और सामाजिक संगठनों में परिवर्तन लाये। किन्तु औद्योगिक क्रान्ति के साथ हुये आर्थिक एवं तकनीकी परिवर्तन नगरीकरण के सम्पूर्ण इतिहास के विकास को प्रभावित करने वाले सबसे प्रबल कारक थे। औद्योगिकीकरण के बाद के काल के दौरान जबकि अधिकांश उन्नत देश नगरीय बन गये, पश्चिमी देश प्रधानता ग्रामीण ही रहें। नगरीकरण जो उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आरम्भ हुआ था आगे चलकर बीसवीं शताब्दी के हाल ही के दशकों में विश्व के विकासशील देशों को प्रभावित करने लगा। यद्यपि 1920 से नगरीकरण के अनुपात में वृद्धि की दर सार्वभौमिक रूप से विकासशील देशों में विकसित देशों की तुलना में तेज थी। यदि हम समसामायिक नगरीकरण को देखें, तो कुछ महत्वपूर्ण कारक जो बीसवीं शताब्दी में अधिक तीव्र वृद्धि लाये है

विदिशा के विकास में भी उसकी भौगोलिक अवस्थित ने विविधता वाले रोजगारों के साथ अर्थव्यवस्था का तृतीयक क्षेत्र, सामाजिक कारक जैसे शिक्षा, ललित कलाएं और अन्य सांस्कृतिक केन्द्रों में बड़ी मात्रा में विविध प्रकार के लोगों को आकर्षित किया है, जनसंख्या की वृद्धि में जनसंख्या के प्राकृतिक रूप से बढ़ने ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, और यातायात ने काम के प्रभाव विशेष रूप से मोटर यातायात न कार्य के लिये की जाने वाली यात्राओं को लम्बी दूरी तक विस्तृत किया। जिसके परिणामस्वरुप शिथिल रूप से

संचरित नगरीय क्षेत्र का विकास हुआ। जहां तक नगरीकरण की प्रवृत्तियों का संबंध है ।जिसके कारण, नगरीय परिधि प्रदेशों में परिवर्तन आये।

19वी शताब्दी में विदिशा के नगरीकरण ने एक अभूतपूर्व परिवर्तन दिखा। न केवल एक सांस्कृतिक स्थल है बल्कि मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला भी है जो संस्कृति के साथ-साथ आर्थिक विकास में भी मध्य प्रदेश को विकास के ओर अग्रसर कर रहा है और नगरीकरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ सूची

1. राव. बी. पी. तथा शर्मा, नन्देश्वर, नगरीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर 2001 पृ.5
2. शर्मा, रूपम- नगरीय सेवाएं एवं जीवन की गुणवत्ता: शोत्र प्रबंध, गोरखपुर, 2000 पृ 4.17
3. मौर्य: एस.डी.-भौगोलिक परिभाषिक शब्दकोश, शारदा पुस्तक भवन् इलाहबाद, २005 पृ- 5
4. राठौर, डॉ विकल्प सिंह और जादौन, संजय सिंह, म.प्र की विदिशा शहर में सामाजिक अवसंरचना प्रबंधन, 2022, पृ. 95
5. भाटिया, नीतेराठौर, विदिशा के प्रमुख पुरातात्विक स्थल एवं उनका पर्यटन महत्व : एक ऐतिहासिक विवेचन (2018) पृ. 09
6. अली, रहमान ,मालवा क्षेत्र की कला और वास्तुकला, शारदा भवन, २004 पृ. 14
7. सरकार, दिनेशचंद्र - प्राचीन एवं मध्यकालीन भायत के धार्मिक जीवन पर अध्ययन
8. मोतीलाल प्रकाशन 1971.पृ 117
9. विदिशा विकास योजना-2035 - संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेस. पृ - 36
10. खान, मुबीन - मध्यप्रदेश के व्यापारिक स्थल, 2320-2882 ,(ijcrt) पृ - 2
11. मध्यप्रदेश राजपत्र आदेश 26 फरवरी 2021
12. खरे, मरेश्वरी दयाल, विदिशा, मप्र हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2009, पृ - 36